Sutra

A thread of togetherness

सलगरा, गोमती – त्रिपुरा
हर सूत्र अपने भीतर अंदर बदलाव की एक कहानी बुनता है।
बिजोयी सीएलएफ की कृषि सखी माधबी साहा ज़मीनी स्तर पर बदलाव की कमान संभाल रही हैं,। किसानों का मार्गदर्शन करते हुए, आजीविका को सशक्त बनाते हुए और ग्रामीण महिलाओं को आगे बढ़कर नेतृत्व करने के लिए प्रेरित कर रही हैं। उनके समर्पण से खेतों में सिर्फ फसलें ही नहीं उग रहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों का भविष्य भी संवर रहा है।

A Quarterly
Model Cluster Level Federation Newsletter
Edition 3 | Oct - Dec, 2025

परिवर्तन के संस्थान:
ग्रामीण बदलाव की अगुवाई करती महिलाओं की कहानियाँ

गांवों और छोटे कस्बों में महिलाएं आजीविकाओं को सशक्त बना रही हैं और मजबूत सामुदायिक संस्थाओं का निर्माण कर रही हैं। स्वयं सहायता समूहों और मॉडल सीएलएफ के माध्यम से वे कृषि, उद्यम और सामाजिक पहलों में बदलाव ला रही रहीं हैं। यह संस्करण ऐसी महिलाओं की कहानियों को साथ लाता है, जो मिलकर परिवर्तन की अगुवाई कर रही हैं।

बिहार

(नई चेतना अभियान के दौरान)

जेंडर सीआरपी के साथ एक दिन

ग्रामीण भारत में बदलाव अक्सर उन महिलाओं से शुरू होता है, जो आगे बढ़कर दूसरों का मार्गदर्शन करतीं हैं। जेंडर कम्युनिटी रिसोर्स पर्सन (GCRPs) ऐसे ही परिवर्तन की अग्रदूत हैं। दीदी अधिकार केंद्र (DAK) के माध्यम से, समुदाय से ही प्रशिक्षित GCRPs महिलाओं के अधिकार, सुरक्षा और सशक्तिकरण को बढ़ावा देती हैं। वे जेंडर समानता को मजबूत करने, हिंसा रोकने, कानूनी जागरूकता फैलाने और महिलाओं को सरकारी योजनाओं से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

पिंकी चौरेसिया, कटिहार जिले के मनिहारी प्रखंड की एक GCRP, हैं। वे 14 पंचायतों में काम करते हुए SHG सदस्यों को सहयोग प्रदान करती हैं। बैठकों में परामर्श और जागरूकता सत्रों के माध्यम से वे घरेलू हिंसा, बाल विवाह और सरकारी व गैर-सरकारी योजनाओं तक पहुंच जैसे मुद्दों पर काम करती हैं, साथ ही महिलाओं को शिक्षा और आजीविका के अवसरों की ओर प्रेरित करती हैं।

नई चेतना 4.0 अभियान के तहत, पिंकी महिलाओं और किशोरियों को खेल गतिविधियों - जैसे क्रिकेट, कबड्डी, रस्सी कूद, बैडमिंटन और कैरम आदि के माध्यम से जोड़ती हैं।जिससे उनमें आत्मविश्वास व नेतृत्व क्षमता के विकास के साथ-साथ संवाद के सुरक्षित मंच बनते हैं और वे अपनी मनोंभावों को एक दूसरे के सामने व्यक्त कर पाती है।

प्रस्तुत हैं
कटिहार जिले के मनिहारी प्रखंड की
जेंडर कम्युनिटी रिसोर्स पर्सन
(GCRP)

पिंकी चौरेसिया

SHG	RADHE SHG
VO	PRERNA VO
MCLF	JAGRUK MCLF
Coverage	14 Panchayats
Block	Manihari
District	Katihar
State	Bihar

दिन की शुरुआत

दिन की शुरुआत घर के कामकाज से करते हुए, वे खुद को दिनभर के कार्यों के लिए तैयार करती हैं।

सुबह
6:00 बजे

दिन की योजना और केस समीक्षा

- लंबित मामलों की समीक्षा करती हैं, गांवों के दौरे की योजना बनाती हैं और जरूरी फॉलो-अप तय करती हैं।

सुबह
10:00 – 10:30 बजे

सामुदायिक संवाद

SHG और VO बैठकों में भाग लेकर महिलाओं के अधिकार, सामाजिक मुद्दों और योजनाओं पर जागरूकता फैलाती हैं।

सुबह
10:30 – दोपहर 12:30 बजे

योजना से जोड़ना और समन्वय

- ब्लॉक स्तर के अधिकारियों के साथ समन्वय कर पात्र महिलाओं को पेंशन, आवास, आजीविका और अन्य योजनाओं से जोड़ती हैं।

दोपहर
12:30 – 1:30 बजे

फील्ड विज़िट और परामर्श

घरों का दौरा करती हैं, घरेलू हिंसा से प्रभावित महिलाओं को परामर्श देती हैं और उन्हें सहायता सेवाओं से जोड़ती हैं।

दोपहर
1:30 – 3:30 बजे

नई चेतना गतिविधियाँ

- महिलाओं और किशोरियों के साथ खेल आधारित गतिविधियाँ आयोजित कर आत्मविश्वास और नेतृत्व को बढ़ावा देती हैं।

दोपहर
3:30 – 4:30 बजे

दस्तावेज़ीकरण और रिपोर्टिंग

रजिस्टर अपडेट करती हैं, मामलों का रिकॉर्ड रखती हैं और दिन की रिपोर्ट तैयार करती हैं।

शाम
4:30 – 5:00 बजे

गोवा

परंपरा से प्रगति तक: अस्तुरी मॉडल सीएलएफ की यात्रा

पोंडा: गोवा के पोंडा क्षेत्र के जीवंत सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य में, अस्तुरी एमसीएलएफ मल्टीपर्पज़ कोऑपरेटिव सोसाइटी लिमिटेड एक ऐसे सहकारी उद्यम के रूप में उभरी है, जहाँ महिलाओं के नेतृत्व में शासन, वित्त और आजीविका नवाचार एक साथ आगे बढ़ रहे हैं।

16 फरवरी 2023 को गठित और 24 दिसंबर 2024 को गोवा सहकारी समितियां अधिनियम, 2001 के अंतर्गत पंजीकृत, अस्तुरी एमसीएलएफ आज 8 ग्राम पंचायतों बोरिम, शिरोडा, पंचवाड़ी, मडकईम, बेटोड़ा, कुंडईम, बंडोरा और कुर्टी-उसगांव को कवर करता है।

कम समय में ही इसने एक मजबूत संस्थागत ढांचा विकसित किया है, जिसमें 2,063 महिला सदस्य, 152 स्वयं सहायता समूह, 12 ग्राम संगठन, 24 कार्यकारी समिति सदस्य और 5 सक्रिय उप-समितियाँ शामिल हैं। इस संरचना ने महिलाओं को योजना, क्रियान्वयन, निगरानी और समीक्षा जैसे महत्वपूर्ण रणनीतियों से कार्यों में आत्मविश्वास के साथ आगे आने का अवसर दिया है।

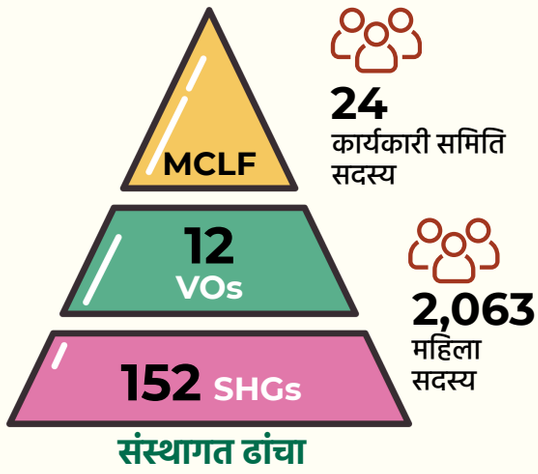

इसके विकास का एक महत्वपूर्ण पड़ाव रहा ₹1.16 करोड़ का सामुदायिक निवेश निधि (CIF) प्राप्त होना। इस राशि के प्रभावी और पारदर्शी उपयोग ने SHGs के लिए आसान ऋण तक पहुँच को मजबूत किया, उद्यम विकास को बढ़ावा दिया और फेडरेशन की शासन व्यवस्था में विश्वास व जवाबदेही को और सुदृढ़ किया।

9 जून 2025 को कम्युनिटी मैनेज्ड ट्रेनिंग सेंटर (CMTC) की स्थापना ने इस यात्रा को नई दिशा दी। इसके बाद से, इस केंद्र में 40 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जा चुके हैं, जिनमें ऑडिट और वित्तीय प्रबंधन, कानूनी अनुपालन, लेखांकन, उप-समिति भूमिकाएँ, CBO-HR प्रबंधन, विज़निंग मॉड्यूल, सामाजिक समावेशन, कृषि एवं गैर-कृषि आजीविकाएँ, वित्तीय साक्षरता शिविर और महा लोन बैंक मेले शामिल हैं। यह केंद्र तेजी से संकुल संघ की स्व गठित एक सशक्त क्षमता-विकास केंद्र के रूप में उभरा है, जो महिलाओं को व्यावहारिक कौशल और संस्थागत आत्मविश्वास प्रदान कर रहा है।

इसका प्रभाव प्रशिक्षण कक्षों से आगे भी दिखाई दे रहा है। CMTC से प्रशिक्षित महिलाएँ अब मुख्यमंत्री अन्नपूर्णा योजना के तहत कैटरिंग सेवाएँ चला रही हैं, उपहार पैकेट तैयार कर रही हैं, स्टेशनरी सेवाओं का संचालन कर रही हैं, समन्वयक के रूप में कार्य कर रही हैं और वरिष्ठ संसाधन व्यक्ति (SRP) के रूप में योगदान दे रही हैं। नियमित आय और पेशेवर पहचान धीरे-धीरे आर्थिक निर्भरता की जगह ले रही है।

अस्तुरी एमसीएलएफ ने परंपराओं को संजोने की दिशा में भी महत्वपूर्ण पहल की है। छह हथकरघा केंद्रों के माध्यम से 90 महिलाएँ कुन्बी शॉल, साड़ियाँ, ड्रेस मटेरियल, तौलिये, चटाई और योगा मैट का उत्पादन कर रही हैं। ये केंद्र सांस्कृतिक विरासत को आजीविका के अवसरों से जोड़ते हैं, जिससे पारंपरिक कौशल आज भी प्रासंगिक और लाभकारी बने हुए हैं।

क्षमता निर्माण केंद्र

कम्युनिटी मैनेज्ड ट्रेनिंग सेंटर (CMTC)
स्थापना: 9 जून 2025

40
प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

प्रशिक्षण के बाद महिलाएँ इन गतिविधियों से जुड़ीं:

- कैटरिंग सेवाएँ
- गिफ्ट हैम्पर निर्माण
- स्टेशनरी
- कार्यक्रम समन्वयक आदि

अस्तुरी मॉडल क्लस्टर लेवल फेडरेशन आज आत्मविश्वासी महिला नेताओं का निर्माण कर रहा है, जिनका कार्य गोवा के आर्थिक और सामाजिक परिदृश्य को नई दिशा दे रहा है।

असम

वित्तीय आत्मनिर्भरता की ओर: धीमाजी, असम में सृष्टि मॉडल सीएलएफ की यात्रा

धीमाजी: महिलाओं के स्वयं सहायता समूहों के एक छोटे से समूह के रूप में शुरू हुई यह पहल आज एक आत्मनिर्भर सामुदायिक संस्था बन चुकी है, जो अपने कार्य प्रणाली को मजबूत करते हुए दूसरों की क्षमताओं का भी निर्माण कर रही है।

अक्टूबर 2016 में धीमाजी ब्लॉक में गठित सृष्टि मॉडल सीएलएफ आज 58 गांवों के 6,370 परिवारों में फैले 749 SHGs को जोड़ता है। समय के साथ, इसने अनुशासित वित्तीय प्रबंधन और विविध आय स्रोतों के माध्यम से अपनी आर्थिक नींव को मजबूत किया है। मार्च 2025 तक, इसने ₹7.21 करोड़ का कोष बनाया, जिसमें ₹5.58 करोड़ सामुदायिक निवेश कोष ऋण के रूप में संचालित हो रहा है।

इस एमसीएलएफ की 97.14% पुनर्भुगतान दर (repayment rate) और 123% से अधिक संचालनात्मक आत्मनिर्भरता इन महिलाओं की उल्लेखनीय उपलब्धि को दर्शाती है।

एक नजर में

749 स्वयं सहायता समूह	**35** ग्राम संगठन	**7.21** Cr कोष	**97.1** % पुनर्भुगतान दर	**123** % संचालनात्मक आत्मनिर्भरता

दिसंबर 2021 में, परियोजना अनुदानों पर निर्भरता कम करने के लिए, एमसीएलएफ ने अपना कम्युनिटी मैनेज्ड ट्रेनिंग सेंटर (CMTC) स्थापित किया। इस केंद्र ने सामुदायिक ढांचे को एक आय-सृजन करने वाले उद्यम में बदल दिया। ASRLM से ₹7.5 लाख की प्रारंभिक सहायता से यह केंद्र सरकारी विभागों, बैंकों, विकास संगठनों और निजी संस्थानों के लिए आवासीय और गैर-आवासीय प्रशिक्षण आयोजित करने हेतु विकसित किया गया।

आज, CMTC परिसर में 50 प्रतिभागियों की क्षमता वाला सुसज्जित प्रशिक्षण कक्ष, ऑडियो-विजुअल सिस्टम, इंटरनेट कनेक्टिविटी, पावर बैकअप, CCTV युक्त परिसर, कार्यालय कक्ष और 40 प्रशिक्षुओं के लिए आवासीय सुविधा उपलब्ध है। स्थानीय महिलाओं द्वारा संचालित सामुदायिक रसोई यहाँ आने वाले प्रतिभागियों के लिए अपनेपन के साथ सुगम आतिथ्य सुनिश्चित करती है।

CMTC ने स्थानीय स्तर पर महिलाओं के लिए रोजगार के अवसर सृजित किए हैं और सृष्टिमॉडल सीएलएफ को जिला स्तर के ज्ञान केंद्र के रूप में स्थापित किया है। आज धीमाजी में जो खड़ा है, वह केवल एक प्रशिक्षण केंद्र नहीं, बल्कि इस बात का प्रमाण है कि जब सामुदायिक संस्थाएं पेशेवर तरीके से संचालित होती हैं और उद्यमशील दृष्टिकोण अपनाती हैं, तब वे सामाजिक प्रभाव को बढ़ाते हुए गौरव के साथ वित्तीय आत्मनिर्भरता प्राप्त कर सकती हैं।

कैसे करता है आय सृजन?

- विभाग / बैंक / संस्थान
- प्रशिक्षण सेवाएँ
- शुल्क आधारित मॉडल
- आय सृजन

सफलता के प्रमुख कारण

- सक्रिय प्रशिक्षण समिति
- विभागीय समन्वय
- समय पर योजना
- स्थानीय विशेषज्ञों का उपयोग
- निरंतर फॉलो-अप

प्रभाव

- रोजगार के अवसर सृजित
- जिला स्तरीय ज्ञान केंद्र स्थापित
- आय के स्थायी स्रोत विकसित
- संस्थागत क्षमता मजबूत

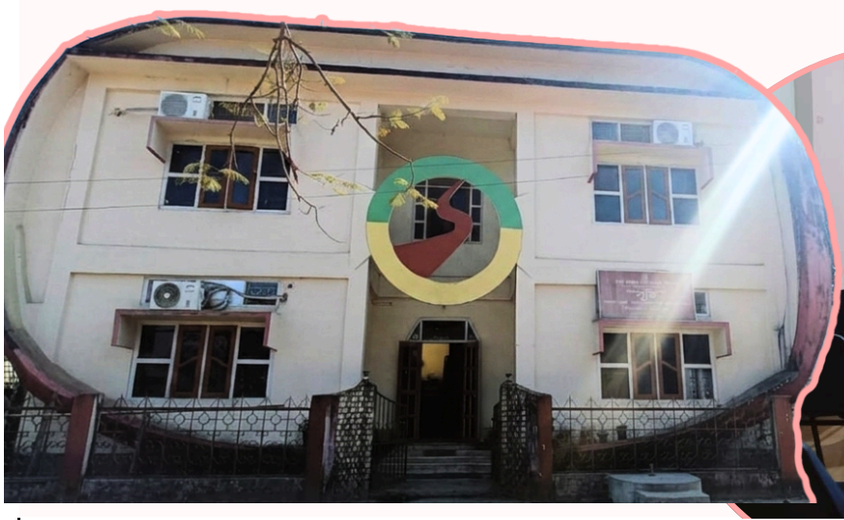

छत्तीसगढ़

खेत, पशुधन और नेतृत्व: अनोखा मॉडल सीएलएफ की प्रेरक कहानी

सीतापुर: छत्तीसगढ़ के सरगुजा जिले के सीतापुर ब्लॉक के हरियाली से घिरे क्षेत्रों में अनोखा मॉडल क्लस्टर लेवल फेडरेशन (MCLF) महिलाओं के जीवन में उल्लेखनीय बदलाव ला रहा है। छह वर्ष पहले शुरू हुई इस पहल ने आज 4,517 परिवारों, 392 SHGs और 15 ग्राम संगठनों को जोड़ते हुए एक मजबूत नेटवर्क तैयार किया है।

हालांकि, सीतापुर में अनिश्चित मानसून के कारण आय भी अनिश्चित रहती थी। बेहतर खेती की तकनीकों की कमी से उत्पादन सीमित था और पशुपालन में बीमारियों के कारण नुकसान होता था। इन चुनौतियों से निपटने के लिए, अनोखा एमसीएलएफ की महिलाओं ने मिलकर अपनी स्थानीय आजीविका को समझने और सुधारने की दिशा में सामूहिक पहल की।
12 गांवों में, उन्होंने मौजूदा आजीविका विकल्पों का आकलन कर , कमियों को पहचाना और सामूहिक समाधान विकसित किए।

कृषि में बदलाव

कृषि पाठशाला एवं फील्ड प्रदर्शन

750
सब्जी उत्पादक महिला किसान

प्रशिक्षण के प्रमुख क्षेत्र:

- उन्नत फसल किस्में
- नर्सरी बेड तैयारी
- बीज एवं मृदा उपचार
- स्थानीय जड़ी-बूटियों से जैविक घोल तैयार करना

पशुपालन में सशक्तिकरण

1,114
परिवारों तक पहुंच

मुख्य पहल:

- टीकाकरण
- नस्ल सुधार (बधियाकरण)
- डीवॉर्मिंग (कृमिनाशन)
- सुरक्षित पशु आवास हेतु मचान संरचना

Diseases prevented:

- बकरी प्लेग
- गोट पॉक्स
- फुट एंड माउथ डिजीज

खेती में बदलाव कृषि पाठशालाओं और फील्ड प्रदर्शन के माध्यम से स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा। लगभग 750 किसानों को उन्नत तकनीकों, नर्सरी प्रबंधन, पोषण प्रबंधन और जैविक विधियों का प्रशिक्षण दिया गया। धान किसानों ने पारंपरिक तरीकों की जगह SRI और लाइन ट्रांसप्लांटेशन अपनाना शुरू किया, जिससे उत्पादन और निर्णय क्षमता दोनों में सुधार हुआ।

पशुपालन में, रोग रोकथाम आधारित देखभाल को प्राथमिकता दी गई। टीकाकरण और डीवॉर्मिंग से 1,114 परिवारों के पशुधन की सुरक्षा मिली। नस्ल सुधार और सुरक्षित आवास से नुकसान कम हुआ और पशुपालन एक भरोसेमंद आय स्रोत बन गया।

बीज आपूर्ति और उत्पादक समूह आधारित पहल के माध्यम से किसान बेहतर गुणवत्ता वाले बीज सस्ती दरों पर प्राप्त करने लगे। आज **1,600 परिवार बीज व्यवसाय** से जुड़े हैं, जिससे कृषि मूल्य श्रृंखला में उनकी भूमिका मजबूत हुई है।

पिछले छह वर्षों में,एमसीएलएफ ने कृषि सखी, पशु सखी और उद्यम सखी जैसे मजबूत परिचालन (कैडर) तैयार किए हैं। साथ ही, रिकॉर्ड कीपिंग और वित्तीय साक्षरता को सुदृढ़ करते हुए बैंक मित्रों के माध्यम से बैंकिंग सेवाओं तक दीदियों की पहुंच को आसान बनाया है।

आज अनोखा एमसीएलएफ महिलाओं के नेतृत्व में आजीविका परिवर्तन का एक मजबूत मंच बनकर उभरा और अपने दृष्टि वाक्य को धरातल पर उतार रहा है।

बदलाव की झलक

- खेती अधिक उत्पादक बनी
- पशुपालन सुरक्षित और लाभकारी हुआ
- आय के नए स्रोत बने
- महिलाओं की भूमिका मजबूत हुई

Kerala

पोषण से प्रगति तक: करिमन्नूर मॉडल सीएलएफ की पहल

इडुक्की: इडुक्की की पहाड़ियों की गोद में बसा करिमन्नूर एक जीवंत कृषि प्रधान पंचायत है, जो अपनी मजबूत ग्रामीण समुदाय के लिए जाना जाता है।

सामाजिक हस्तक्षेप, नवाचार और माइक्रो-फाइनेंस पहल में उत्कृष्टता के लिए जिले के सर्वश्रेष्ठ मॉडल सीएलएफ के रूप में पहचाने गए करिमन्नूर मॉडल सीएलएफ ने 2023 में शुरू की गई "पोषक बाल्यम" पहल के माध्यम से समन्वय आधारित विकास का एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। कुडुम्बश्री मिशन के अंतर्गत, इस पहल को पंचायत के सहयोग से लागू किया गया, जिसका उद्देश्य दो प्रमुख प्राथमिकताओं बच्चों का पोषण और महिलाओं का सशक्तिकरण को एक साथ आगे बढ़ाना था।

यह पहल तीन मुख्य उद्देश्यों पर आधारित थी:

- आंगनवाड़ियों को अंडे और पोषण आहार की नियमित आपूर्ति सुनिश्चित करना
- महिलाओं के लिए स्थायी आय के अवसर बनाना
- पशुपालन आधारित आजीविका के लिए बाजार से जुड़ाव स्थापित करना

इसको लागू करने के लिए, मॉडल सीएलएफ ने **1,733 इच्छुक सदस्यों की पहचान की** और पंचायत के सहयोग से **8,500 अंडा देने वाली मुर्गियों का वितरण** किया। प्रत्येक परिवार को उपभोग और बिक्री दोनों के लिए पर्याप्त संख्या में मुर्गियाँ दी गईं। कुडुम्बश्री स्वयंसेवकों के माध्यम से एक सुव्यवस्थित घर-घर संग्रह और आपूर्ति प्रणाली तैयार की गई। अंडे और दूध प्रतिदिन एकत्र कर सीधे आंगनवाड़ियों तक पहुंचाए गए, जिससे बिचौलियों की भूमिका समाप्त हुई और ताजा व गुणवत्तापूर्ण उत्पाद सुनिश्चित हुआ। कुछ ही महीनों में पंचायत ने अपनी अंडों की आवश्यकता पूरी करने में आत्मनिर्भर बना ली ।

पोषण आपूर्ति श्रृंखला

वितरण के साथ-साथ, मॉडल सीएलएफ ने पोल्ट्री देखभाल, आहार प्रबंधन और स्वच्छता पर प्रशिक्षण देकर संस्थागत सशक्तिकरण सुनिश्चित किया। नियमित फॉलो-अप और पशु चिकित्सा सहयोग से मुर्गी मृत्यु दर को कम किया गया और उत्पादकता बनाए रखी गई।

इस पहल के केंद्र में कुडुम्बश्री के SHG की महिलाएँ थीं, जिनमें से कई गृहिणी या असंगठित श्रमिक थीं, जिनकी आय अनियमित थी। हालांकि उनमें इच्छाशक्ति और बुनियादी जानकारी थी, लेकिन स्थायी आय के लिए कोई संगठित मंच नहीं था। **"पोषक बाल्यम"** ने इस अंतर को भरते हुए घरेलू उत्पादन को स्थानीय पोषण मांग से जोड़ा और मौजूदा कौशल को स्थिर व सम्मानजनक आजीविका में बदल दिया।

इस पहल के परिणाम परिवर्तनकारी रहे। पंचायत ने बच्चों को नियमित पोषण सुनिश्चित किया, वहीं महिलाओं को औसतन **₹1,000–₹2,000 प्रति माह अतिरिक्त आय** प्राप्त होने लगी।

कई परिवारों के लिए यह पहला अवसर था जब महिलाओं ने सीधे घर की आय में योगदान दिया, जिससे उनका सम्मान, आत्मविश्वास और सामाजिक भूमिका मजबूत हुई। संग्रह प्रणाली ने छोटे स्तर पर रोजगार के अवसर भी पैदा किए और आसपास की पंचायतों में भी इस मॉडल को अपनाने की रुचि बढ़ी।

"पोषक बाल्यम" अब केवल एक पोषण पहल नहीं है, बल्कि यह मॉडल सीएलएफ द्वारा संचालित एक सफल समन्वय मॉडल है, जो दिखाता है कि संस्थागत योजना, महिला समूह और स्थानीय शासन मिलकर कैसे बच्चों और समुदाय दोनों के भविष्य को सशक्त बना सकते हैं।

नव दिशा संवाद

नवंबर 2025 में, "नव दिशा संवाद" शीर्षक से दो दिवसीय राष्ट्रीय परामर्श का आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य SHG महिलाओं को DAY-NRLM की भविष्य दिशा तय करने की प्रक्रिया में शामिल करना था।
इस कार्यशाला में देशभर से SHG सदस्य एकत्र हुए और मिशन के अगले चरण की सामूहिक रूप से कल्पना करते हुए विजन 2031 के लिए अपने विचार साझा किए, जो विकसित भारत 2047 के लक्ष्य के अनुरूप है।
इस परामर्श ने एक सहभागी मंच प्रदान किया, जहाँ महिलाओं ने अपनी यात्रा पर विचार किया, सामुदायिक संस्थानों से जुड़े अनुभव साझा किए और अपने परिवारों व गांवों के लिए अपनी आकांक्षाओं पर चर्चा की।

भागीदारी

89
प्रतिभागियों की उपस्थिति

23 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों से 57 SHG महिलाओं द्वारा नेतृत्व।

कार्यशाला का उद्देश्य

महिला-नेतृत्व वाले संस्थानों के माध्यम से एक मजबूत ग्रामीण पारिस्थितिकी तंत्र की सामूहिक कल्पना पर केंद्रित रहीं।

मुख्य विषय

- आजीविका विविधीकरण और आय वृद्धि
- स्वास्थ्य, पोषण और शिक्षा में सुधार
- लैंगिक समानता और सामाजिक समावेशन
- अधिकारों और सरकारी योजनाओं तक पहुंच
- पर्यावरणीय स्थिरता
- आधारभूत संरचना विकास
- सामुदायिक संस्थानों और नेतृत्व को सुदृढ़ करना

विजन 2031 – चार आकांक्षी स्तंभ

सामूहिक चर्चा और सहभागी अभ्यासों के माध्यम से SHG महिलाओं ने चार प्रमुख पहचान आधारित विजन साझा किए:

सक्षम दीदी
आत्मविश्वासी,सशक्त और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर महिलाएँ, जो अपने समुदायों में परिवर्तन का नेतृत्व करती हैं।

आदर्श परिवार
स्वस्थ, शिक्षित और लैंगिक समानता पर आधारित परिवार, जिनकी आजीविका स्थिर हो।

विकसित गाँव
मजबूत आधारभूत संरचना, सामाजिक समरसता और सतत आजीविका वाले विकसित गांव।

समृद्ध संगठन
मजबूत SHG, VO और CLF संस्थान, जो स्थानीय संसाधनो की पहचान कर विकास की योजना बनाते और उसे आगे बढ़ाते हैं।

मुख्य परिणाम

- विजन 2031 के लिए आठ विकास क्षेत्रों की पहचान - आजीविका, स्वास्थ्य, शिक्षा, जेंडर समानता, पर्यावरण, आधारभूत संरचना, अधिकार और संस्थागत सुदृढ़ीकरण।
- भविष्य के NRLM हस्तक्षेपों के लिए परिणाम आधारित संकेतकों और रणनीतियों का विकास।
- स्थानीय विकास के लिए CLFs को समन्वय मंच के रूप में मजबूत करने पर विशेष बल।

ग्रामीण विकास मंत्रालय
भारत सरकार
MINISTRY OF RURAL DEVELOPMENT
GOVERNMENT OF INDIA

आजीविका AAJEEVIKA

संपादकीय टिप्पणी

नई दिशा की ओर: संस्थाओं से सशक्त प्रणाली तक: DAY-NRLM 2.0 में मॉडल CLFs की नई भूमिका

सूत्र के इस तीसरे संस्करण के साथ यह समझना आवश्यक है कि जमीनी स्तर से मिल रहे अनुभव हमें आगे की दिशा के बारे में क्या संकेत दे रहे हैं। DAY-NRLM के आगामी 5 वर्ष एक बदलाव का चरण होगा I SHG, VO और CLF जैसे संस्थागत ढांचे अब स्थापित हो चुके हैं। महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि क्या ये संस्थाएं स्वयं योजना बना सकती हैं, निर्णय ले सकती हैं और अपने दम पर आगे बढ़ सकती हैं, या अभी भी कार्यक्रम पर निर्भर हैं। आगे की रणनीति और निवेश इसी समझ के आधार पर तय होने चाहिए।

अब समय है कि CLFs के नियमित कार्य जैसे ऋण सुविधा, रिकॉर्ड प्रबंधन और योजनाओं से जोड़ना व्यवस्थित रुप से प्रणाली का हिस्सा बनें। साथ ही, CLFs को आजीविका और उद्यम को बढ़ावा देने वाले प्लेटफॉर्म, स्थानीय समन्वय के केंद्र और आर्थिक रुप से आत्मनिर्भर संस्थाओं के रुप में विकसित किया जाए।

इसके साथ ही यह सुनिश्चित करना उतना ही जरुरी है कि CLFs अपनी मूल पहचान एक सामाजिक संस्था के रुप में बनाए रखें। लैंगिक समानता, पोषण, स्वास्थ्य, शिक्षा और कमजोर वर्गों की सुरक्षा जैसे मुद्दे किसी भी तरह से गौण नहीं हैं। केवल आर्थिक रुप से मजबूत होना पर्याप्त नहीं है बल्कि सामाजिक रुप से सशक्त होना भी उतना ही आवश्यक है।

नव दिशा संवाद के अनुभव स्पष्ट करते हैं कि समुदाय अब व्यापक और दीर्घकालिक सोच के साथ आगे बढ़ रहा है। विकसित भारत @2047 के लक्ष्य के अनुरुप, मॉडल CLFs को केवल कार्यान्वयन इकाई नहीं, बल्कि विकास के रणनीतिक साझेदार के रुप में स्थापित करना होगा।

जमीनी स्तर से यह स्पष्ट है कि सामुदायिक संस्थाओं में किया गया निवेश कई गुना प्रभाव उत्पन्न करता है। सूत्र के माध्यम से यही प्रयास है कि इन अनुभवों से मिली सीख आगे की दिशा और निर्णयों को मजबूत बनाए।

Dr. Jui Bhattacharya
National Mission Manager,
IBCB , NMMU, DAY-NRLM

Editorial Board

Advisors

Ms. Smriti Sharan
Joint Secretary, Rural Livelihoods
Ministry of Rural Development,
Government of India

Dr. Monika
Deputy Secretary, Rural Livelihoods
Ministry of Rural Development,
Government of India

Mr. Raman Wadhwa
Deputy Director

Editor-in-chief

Dr. Jui Bhattacharya
National Mission Manager,
IBCB, NMMU, DAY-NRLM

Editors

Ms. Shubholaxmi Roy
National Program Manager,
IBCB, NMMU, DAY-NRLM

Mr. Aman Raj
National Program Manager,
IBCB, NMMU, DAY-NRLM

Ms. Swarnlata Srivastav
Master-State Resource Person,
Uttar Pradesh - SRLM

Contributors

Nivedita Doley
DFE-SMIBCB,
Assam SRLM

Godson
Media Intern,
Kudumbashree, Kerala

Gauri Shirodkar
President, Asturi
MCLF - Goa SRLM

Ruhi Afreen
Young Professional, Gender,
SISD- Bihar JEEViKA

Devendra Singh Patel
DPM- SMIB, Surguja
Chhattisgarh SRLM

Vikash Kumar
RPM - PRADAN
Chhattishgarh

ग्रामीण विकास मंत्रालय
भारत सरकार
MINISTRY OF RURAL DEVELOPMENT
GOVERNMENT OF INDIA
Seekho Didi
Training Management

Build Capacity. Build Stronger CBOs.

Join our LMS to access courses on CBO strengthening, complete them at your convenience, and receive certification.

Scan this QR Code or login to https://training.lokos.in/

Self Paced Learning
Specialized courses
Simple and interacting learning
Certification on Completetion

Available Courses related to MCLF

- **Million Designers Billion Dreams**
  Learn how to solve problems using design thinking.
- **Financial Management for CBO's (English and Hindi)**
  Design to strengthen Financial Management capacity of SHG, VO and CLF.
- **CMTCs**
  Design to strengthen the operationalization of CMTCs